International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at http://euroasiapub.org/journals.php
Vol. 6 Issue 12, December 2016
ISSN: 2249-7382 Impact Factor: 6.225 | Thomson Reuters ID: L-5236-2015

कालिदास और भवभूति के रूपकों में नैतिक मूल्य

डा सरोज, सहायक आचार्य संस्कृत

रामेश्वरी देवी राज. कन्या महाविद्यालय भरतपुर

सार

कालिदास पहली शताब्दी ई.पू. के संस्कृत भाषा के महान कवि और नाटककार थे। उन्होंने भारत की पौराणिक कथाओं और दर्शन को आधार बनाकर रचनाएँ की और उनकी रचनाओं में भारतीय जीवन और दर्शन के विविध रूप और मूल तत्त्व निरूपित हैं। कालिदास अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण राष्ट्र की समग्र राष्ट्रीय चेतना को स्वर देने वाले कवि माने जाते हैं और कुछ विद्वान उन्हें राष्ट्रीय कवि का स्थान तक देते हैं। अभिज्ञानशाकुंतलम् कालिदास की सबसे प्रसिद्ध रचना है। यह नाटक कुछ उन भारतीय साहित्यिक कृतियों में से है जिनका सबसे पहले यूरोपीय भाषाओं में अनुवाद हुआ था। यह पूरे विश्व साहित्य में अग्रगण्य रचना मानी जाती है। मेघदूतम् कालिदास की सर्वश्रेष्ठ रचना है जिसमें कवि की कल्पनाशक्ति और अभिव्यंजनावाद भावाभिव्यन्जना शक्ति अपने सर्वोत्कृष्ट स्तर पर है और प्रकृति के मानवीकरण का अद्भुत रखंडकाव्ये से खंडकाव्य में दिखता है।कालिदास वैदर्भी रीति के कवि हैं और तदनुरूप वे अपनी अलंकार युक्त किन्तु सरल और मधुर भाषा के लिये विशेष रूप से जाने जाते हैं। उनके प्रकृति वर्णन अद्वितीय हैं और विशेष रूप से अपनी उपमाओं के लिये जाने जाते हैं। साहित्य में औदार्य गुण के प्रति कालिदास का विशेष प्रेम है और उन्होंने अपने शृंगार रस प्रधान साहित्य में भी आदर्शवादी परंपरा और नैतिक मूल्यों का समुचित ध्यान रखा है। कालिदास के परवर्ती कवि बाणभट्ट ने उनकी सूक्तियों की विशेष रूप से प्रशंसा की है।

मुख्य शब्द: *कालिदास, भवभूति, नैतिक*

परिचय

कालिदास (5वीं शताब्दी ई० संस्कृत भाषा के महान कवि और नाटककार थे। उन्होनें भारत की पौराणिक कथाओं और दर्शन को आधार बनाकर रचनाएँ की और उनकी रचनाओं में भारतीय जीवन और दर्शन के विविध रूप और मूल तत्व निरूपित है। कालीदास अपनी इन्ही विशेषताओं के कारण राष्ट्र के समग्र राष्ट्रीय चेतना को स्वर देने वाले कवि माने जाते हैं और कुछ विद्वान उन्हें राष्ट्रीय कवि का स्थान देते हैं। अभिज्ञानशाकुन्तलम् कालिदास की सबसे प्रसिद्ध रचना है। यह नाटक कुछ उन भारतीय साहित्यिक कृतियों में से है जिनका सबसे पहले यूरोपीय भाषाओं में अनुवाद हुआ था । यह पुरे विश्व साहित्य में अग्रगण्य रचना मानी जाती है । मेघदूतम कालिदास की सर्वश्रेष्ठ रचना है जिसमें कवि की कल्पना शक्ति और अभिव्यंजनावादभावाभिव्यन्जना शक्ति अपने सर्वोत्कृष्ट स्तर पर है और प्राकृतिक के मानवीकरण का अद्भूत रूपककाव्य से खंडकाव्य में दिखता है

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at http://euroasiapub.org/journals.php
Vol. 6 Issue 12, December 2016
ISSN: 2249-7382 Impact Factor: 6.225 | Thomson Reuters ID: L-5236-2015

कालिदास वैदर्भी रीति के कवि हैं और तदनुरूप वे अपनी अलंकारयुक्त किन्तु सरल और मधुर भाषा के लिए विशेष रूप से जाने जाते हैं । उनके प्रकृति वर्णन अद्वितीय हैं और विशेष रूप से अपनी उपमाओं के लिए जाने जाते हैं । साहित्य में औदार्य गुण के प्रति कालिदास का विशेष प्रेम है और उन्होंने अपने शृंगार रस प्रधान साहित्य में भी आदर्शवादी परम्परा और नैतिक मूल्यों का समुचित ध्यान रखा है। प्रस्तुत पत्र में दीपशिखा कनिष्ठिकाधिष्ठित कविकुलगुरू कालिदास के काव्यों में निहित शैक्षणिक तत्वों पर दृष्टिपात किया गया है। कालिदासीय काव्यों में निहित तत्त्व जीवन के हितार्थ लाभप्रद एवं अमृतस्वरूपा औषधि हैं । इस अमृततुल्य औषधि में जीवन के मूल्य सुरक्षित हैं । सम्पूर्ण जीवन का सार इसके आंचल में विद्यमान है। कालिदासीय काव्य जीवन के लिए स्वस्थ्य आधार हैं। इसके अध्ययन एवं ज्ञान के विना जीवनशैली अधूरी तथा अन्धकारमय है।

साहित्यिक, भाषिक, वैज्ञानिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, राष्ट्रीय, अन्ताराष्ट्रीय एवं कलात्मक मूल्य कालिदासीय काव्यों में भरे पड़े हैं। नैतिकता एवं राष्ट्रीयता की दृष्टि से भी महाकवि के काव्यों का स्थान उच्चतम है। नैतिक एवं राष्ट्रीय पृष्ठभूमि के लिए महाकवि के वाक्य अनुकरणीय हैं। श्रेष्ठ एवं वीर महापुरूष इनके रूपकों के पात्र बनकर हमारे समक्ष आते हैं जो हमारे चतुर्दिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं

एक उदाहरण के रूप में यहाँ गुरू की विशेषता को कालिदास की दृष्टि से देखा जाय, जो कितना सटीक है क्योंकि शिक्षण कार्य में गुरू एक आवश्यक एवं मूलभूत तत्व के रूप में सर्वविदित है-

शिलष्टाक्रिया कस्यचिदात्मसंस्था संक्रान्तिरन्यस्य विशेषयुक्ता ।

यस्योभयं साधु स गुरूणां धुरि प्रतिष्ठापयितव्य एव । ।

अर्थात् सर्वश्रेष्ठ गुरू वही है जो विद्वान् तो हो ही साथ ही साथ अपने ज्ञान से छात्र को भी अच्छी तरह सिखाना जानता हो । गुरू की क्रिया उसकी विद्या अपने आप में ही सुन्दर रहती है। दूसरी ओर कुछ गरू अच्छी तरह सिखाना ही जानता है किन्तु जिसमें दोनों ही बातें अच्छी हो वही गुरूओं में सर्वश्रेश्ठ माना जाना चाहिए। गुरू का ज्ञानवान् होना तथा अपने ज्ञान के द्वारा छात्रों को सम्यक् रूप से अधिगम कराना शिक्षाशास्त्र के मुख्य तत्त्व हैं। जो इन दोनों में प्रवीण है वही सर्वश्रेष्ठ गुरू हैं ।

एक गुरू के मुँह से ऐसी बात निर्देशित कर कालिदास ने एक आदर्श गुरू का सुन्दर विधान किया है । साथ ही कालिदास यहीं चुप नहीं बैठते । वह कह उठते हैं-

"लब्धास्पदोऽस्मीति विवाद भीरोस्तितिक्षमाणस्य परेण निन्दाम् ।

यस्यागमः केवल- जीविकायै तं ज्ञान- पणयं वणिजं वदन्ति । ।"7

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at http://euroasiapub.org/journals.php
Vol. 6 Issue 12, December 2016
ISSN: 2249-7382 Impact Factor: 6.225 | Thomson Reuters ID: L-5236-2015

अर्थात् – मुझे नौकरी मिल गई है - इस विचार से जो गुरू विवादों से डरता है, दूसरे के द्वारा की गई अपनी निन्दा को सहता रहता है और जिसका शास्त्र - ज्ञान केवल पेट भरने के लिए ही है, वह गुरू के रूप में बनिया है जो अपना ज्ञान बेचा करता है ।

कालिदास भारतीय संस्कृति के पोषक हैं। भारतीय संस्कृति में गुरू का स्थान काफी सम्माननीय है । अतः गुरू की भूमिका समाज में काफी बढ़ जाती है। गुरू पीढ़ी तैयार करता है। अतः गुरू को स्वयं समालोचकों की नजर में खरा उतरना पड़ता है। कालिदास इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर मालविकाग्निमित्रम् में स्पष्टतः कहते हैं कि गुरू की शिक्षा अथवा विद्या की कोई बात जब तक समालोचकों के आगे परीक्षार्थ न रखी जाय और उनके द्वारा न सराही जाय तब तक वह निर्दोष नहीं कही जा सकती । गुरू को समालोचकों के समक्ष अपनी विद्वता एवं ज्ञान की परीक्षा सदैव देनी पड़ती है । जिस प्रकार सोने की शुद्धता हेतु अग्नि परीक्षा होती है। सोना असली और शुद्ध तभी कहा जाता है जब उसकी अग्नि परीक्षा होती है। अग्नि परीक्षा में शुद्ध सोना काला न पड़कर और भी उज्ज्वल हो उठता है, निखर उठता है। इसी तरह एक गुरू भी समालोचकों की परीक्षा में उत्तीर्ण होकर निखर उठता है। कालिदास के हीं शब्दों में

उपदेशं विदुः शुद्धं सन्तस्तमुपदेशिनः ।

भयामायते न विद्वत्सु यः कांचनमिवाग्निशु | 18

गुरू को कदापि परीक्षा से घबराना नहीं चाहिये । सत्यासत्य का विवेचन सज्जन ही करते हैं। गुरू की सत्यता एवं असत्यता के संदर्भ में कालिदास के रघुवंशम् की यह पंक्ति भी पूर्वोक्त कथन का समर्थन करती है-

तं सन्तः श्रोतुमर्हन्ति सदसद्वयक्तिहेतवः ।

हेम्नः संलक्ष्यते हयग्नौ विशुद्धिः भयामिकाऽपि वा । ।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के प्रथम अंक में भी कवि ने अपनी इस बात को पुष्ट करते हुए कहा-

आ परितोषाद् विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम् ।

बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः । ।10

जब तक विद्वानों को पूर्ण सन्तोष न हो जाय तब तक गुरू को अपने विशिष्ट ज्ञान को उत्कृष्ट नहीं मानना चाहिए। भली-भाँति निपुणता प्राप्त करने के बाद भी विद्वानों का मन अपने विषय में अविश्वासी ही रहता है ।

गुरू को शिक्षण - कला में दक्ष होना चाहिए । उचित एवं अनुचित पात्र की उसे परख होनी चाहिए । गुरू को सदैव सत्पात्र को ही शिक्षा देनी चाहिए कुपात्र को नहीं - ऐसा मानना है कविकुलगुरू कालिदास का। इस बात का उल्लेख महाकवि ने व्यंजना शैली में अपने प्रसिद्ध रूपक मालविकाग्निमित्रम् के प्रथम पात्र एक गुरू है। वह नाटक में अपनी शिष्या अंक में भी किया है। मालविकाग्निमित्रम् में गणदास नामक । मालविका को सत्पात्र मानता है । उसे वह जो कुछ शिक्षा देता है वह उसमें ऐसे भव्य और उत्कृष्ट रूप में

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at http://euroasiapub.org/journals.php
Vol. 6 Issue 12, December 2016
ISSN: 2249-7382 Impact Factor: 6.225 | Thomson Reuters ID: L-5236-2015

परिणत होती है जिससे उसकी तुलना उस जल - विन्दु से करनी पड़ती है जो सीप के भीतर पड़कर मोती बन जाता है। शिक्षा जलविन्दु है जो मालविका रूपी सत्पात्र सीपी में जाकर मोती की तरह चमक उठता है। योग्य - छात्र को दी गई विद्या इसी तरह निखर उठती है । कालिदास स्पष्ट शब्दों में कहते हैं

पात्रविशेषे न्यस्तं गुणान्तरं व्रजति शिल्पमाधातुः ।

जलमिव समुद्रषुक्तौ मुक्ताफलतां प्योदस्य । ।" ।

कालिदास की मान्यता है कि "शिक्षा" स्वाति नक्षत्र की वर्षा की तरह होती है। सत्पात्र को जब शिक्षा दी जाती है तब उसका फल दूरगामी होता है। हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध कवि अब्दुल रहीम खानखाना ने भी इसी ओर संकेत करते हुए कहा है-

कदली- सीप - भुजंग मुख स्वाति एक गुण तीन ।

जैसी संगति बैठिए तैसोई फल दीन । ।12

कवि कालिदास की यह मान्यता कि अच्छे शिष्य को सिखाई हुई गुरू की कला से इस तरह उत्कृष्ट रूप में निखर उठती है जैसे कि मेघ का जल समुद्र की सीपी में पड़कर मोती बन जाता है। कितना कुछ अभिव्यकत करता है, स्पष्ट ही है । कविकुलगुरू ने ने अपने रघुवंशम् में भी इसी ओर संकेत कर कहा है- "क्रिया हि वस्तूपहिता प्रसीदति ।" 13 परवर्त्ती कवि भवभूति ने भी कालिदास के इसच मत को स्वीकारते हुए स्पष्ट उद्घोष किया है-

वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्यां यथैव तथा जड़े,

न च खलु तयोर्ज्ञाने शक्तिं करोत्यपहन्ति वा ।

भवति च तयोर्भूयान् भेदः फलं प्रति तद्यथा,

प्रभवति शुचिबिम्बग्राहे मणिर्न मृदां चयः । ।14

शिक्षा - शास्त्र में गुरू एवं छात्र का अपना विशेष महत्व है। इन दोनों के विना शिक्षा की कल्पना ही बेमानी है। अतः गुरू और छात्र की सामान्य विशेषताओं पर कालिदासीय दृष्टि से अवगत होने के बाद ही हमें अधिगम कराने योग्य तत्वों पर नजर डालनी चाहिए । वास्तव में छात्रों के लिए अधिगम कराने योग्य विषय ही मूल शैक्षणिक तत्व कहे जा सकते है ।

कालिदास प्रथमतः एक कवि हैं । कवि एवं नाटककार के रूप में उनकी ख्याति प्रसिद्ध है । सफल कवि के रूप में प्रसिद्ध हाहेने के पीछे कविताओं का सशक्त होना आवश्यक है । कालिदास की कविताएँ सशक्त हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कहते हैं कि जब मनुष्य प्रकृति के नाना रूपों और व्यापारों से उच्च उठकर अपने योग–क्षेम, हानि-लाभ, सुख - दुःख आदि को भूलकर तथा अपनी पृथक् सत्ता से छूटकर केवल

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at http://euroasiapub.org/journals.php
Vol. 6 Issue 12, December 2016
ISSN: 2249-7382 Impact Factor: 6.225 | Thomson Reuters ID: L-5236-2015

अनुभूति मात्र रह जाता है अर्थात् उसके व्यक्तित्व का सामान्यीकरण हो जाता है तब उसे मुक्त हृदय कहते हैं । हृदय की इसी मुक्ति साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती है उसे कविता कहते हैं ।

एक सफल कवि के रूप में कालिदास सर्वमान्य हैं। उनकी प्रसिद्ध सप्तकृतियाँ ऋतुसंहारम्, मेघदूतम्, रघुवंशम्, कुमारसम्भवम्, मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम् तथा अभिज्ञानशाकुन्तलम् शैक्षणिक - तत्वों के कोश हैं। कालिदास ने अपने काव्यों में इन तत्वों को सूक्ति के रूप में चुन-चुन कर रखा है। कालिदासीय सूक्तियों में जीवन जीने के मूल्य, जीवन की नीतियों के साथ-साथ पर्यावरण चेतना भी पग-पग पर विद्यमान हैं । यहाँ संक्षेप में कुछ इन्हीं शैक्षणिक - तत्वों को दर्शाना समीचीन है ।

सामान्यतः मनुष्य अपने दुःख को सबसे अधिक मानता है । इसी प्रसंग में कालिदास कहते हैं कि लोग दूसरे के बहुत बड़े कष्ट को भी हल्का कहते हैं

" महदपि पर दुःखं शीतलं सम्यगाहुः । " 15

कालिदास कहते हैं कि जो सुख, दुःख के पश्चात् मिलता है वह अधिक आनन्ददायक होता है क्योंकि वृक्ष की छाया छूप में तपे हुए को विशेष शान्ति देती है-

"यदेवोपनतं दुःखात्सुखं तद्रसवत्तरम् ।

निर्वाणाय तरुच्छाया तप्तस्य हि विशषतः । ।16

मनुष्य के जीवन में सुख - दुःख बारी-बारी से आते हैं। मनुष्य को दुःख में घबराना आर सुख में इतराना नहीं चाहिए। कवि कालिदास ने अपने मेघदूतम् में स्पष्ट कहा है-

" नन्वात्मानं बहु विगणयन्नात्मनैवावलम्बे ।

तत्कल्याणि त्वमपि नितरां मा गमः कातरत्वम् ।

कस्यात्यन्तं सुखनुपनतं दुःखमेकान्ततोवा

नीचैर्गत्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण । ।17

कालिदास ने शिक्षा के इस मनोवैज्ञानिक तत्व को कहकर आत्महत्या, कुण्ठा एवं निराशा से बचने की अनोखी विधि बताई है । यह कालिदास द्वारा कथित एक अद्भूत शैक्षणिक तत्व है।

याचक और दाता के सन्दर्भ में कालिदास बड़े ही सचेत हैं । दान देना भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है। दान की महिमा सर्वत्र कहीं गयी है । कालिदास की दृष्टि में याचकों की सहयता करना सर्वोपरि है। कालिदास कहते है । कि सज्जनों के लिए याचकों की सहायता करना ही अपने स्वार्थ से बढ़कर होता है "स्वार्थात् सतां गुरूता प्रणयिक्रियैव । 18 परन्तु याचना किससे की जाय यह भी कालिदास कह ही देते हैं- "याच्या मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा ।" 19 यहाँ, "लूँगा न कभी भी अधम पुरूष से मिलने पर भी मुँह––मांगा" कहकर कालिदास ने याचक धर्म की सम्यक् व्याख्या की है ।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at http://euroasiapub.org/journals.php
Vol. 6 Issue 12, December 2016
ISSN: 2249-7382 Impact Factor: 6.225 | Thomson Reuters ID: L-5236-2015

-इस प्रकार विभिन्न शैक्षणिक तत्वों को कालिदास के यथासम्भव अपने काव्यों में सम्यक् स्थान दिया है । यहाँ संकेतमात्र के द्वारा उनका उल्लेख न्याय संगत होगा-

यशस्तु रक्ष्यं परतो यशोधनैः / 20

भिन्नरूचिर्हि लोकः 121

आज्ञा गुरूणामविचारणीया | 22

तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते | 23

अतिस्नेहः पापशङ्की 124

अनार्यः परदारव्यवहारः 125

अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम् 126

उत्सवप्रियाः खलु मनुंष्याः 1 27

श्रुतं श्रोतव्यम् | 29

कामार्ता हि प्रकृति कृपणाश्चेतनाचेतनेषु 130

रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय / 31

कालिदासीय काव्यों में निहित शैक्षणिक तत्वों के विवेचन के क्रम में यदि कालिदास के पर्यावरण शिक्षण पर विचार न किया जाय तो वह असंगत होगा। अतएव संक्षेप में इस पर दृष्टिपात कर लेना उचित ही है ।

प्रकृति और पर्यावरण मानव की चिर सहचरी के रूप में विख्यात है। पर्यावरण के मूलभूत तत्व क्षिति-जल–पावक—गगन - समीर के बिना मनुष्य की कल्पना असंभव है। संस्कृत साहित्य में पर्यावरण संरक्षण के लिए गहन चिन्तन किया गया है। अमर कलाकार दीपशिखा कालिदास ने अपने काव्यों में पर्यावरण प्रबन्धन की सुखद एवं मनोहारी चित्रण कर हमें संदेश दिया है कि हम प्राकृति को अपनी जीवनदायिनी शक्ति के रूप में समझे, दासी के रूप में नहीं । प्रकृति अष्ट-रूपा है। उसके आठ रूप हमारे अस्तित्व को बरकरार रखते हैं। जलमयीमूर्ति, अग्निरूपीमूर्ति, मानवप्रजातिरूपीमूर्ति, सूर्य-चन्द्रमयीमूर्ति, पृथ्वीरूपीमूर्ति, वायुरूपीमूर्ति और आकाशरूपीमूर्ति यही प्रकृति का, पर्यावरण का कल्याणकारक रूप है । इनका अनैतिक दोहन, अनुचित प्रबन्धन आपदाओं को जन्म देने वाली है । यह 'शिव' अर्थात् जगत् के

कल्याणकारक रूप की अष्टमूर्ति कही गई है। 'शिव' को छेड़ने पर शिव हमें 'शव' बना देता है। इस शिव को अपने कल्याण रूप में ही प्रयोग करें । कालिदास के ही शब्द में-

या सृष्टिः स्रष्टुराद्या वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री,

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at http://euroasiapub.org/journals.php
Vol. 6 Issue 12, December 2016
ISSN: 2249-7382 Impact Factor: 6.225 | Thomson Reuters ID: L-5236-2015

ये द्वे कालं विधत्तः श्रुति विषयगुणा या स्थिता व्याप्या विश्वम् ।

यामाहुः सर्वबीजप्रकृतिरिति यया प्रानिः प्राणवन्तः,

प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः । ।32

कालिदास के पर्यावरण - शिक्षण का यह रूप शायद हम भूल रहे हैं और भाव की राह पर चलने को तत्पर हैं । उपर्युक्त विवेचन यह स्पष्ट करता है कि महाकवि कालिदास शैक्षणिक तत्वों के निरूपण एवं चित्रण में चतुर चितेरे हैं। अपनी समस्त सप्त कृतियों में शैक्षणिक तत्वों का सावधानी पूर्वक समावेश कर इन्होंने पल-पल हमें नई चेतना, नई स्फूर्ति एवं नई दिशा प्रदान की है।

भवभूति के नैतिक मूल्य

भवभूति (Ethics) नैतिक मूल्यों, नीतियों और मानवीय आचार-व्यवहार के संबंध में जानकारी और विचारधारा का अध्ययन है। यह मूलभूत नियमों, मूल्यों, और सिद्धांतों के माध्यम से हमें अच्छे और बुरे के बीच विचार करने, न्याय के प्रतिपादन करने, और नैतिक निर्णय लेने में मदद करता है। नैतिक मूल्यों का उद्देश्य मनुष्यों के जीवन को न्यायपूर्वक और योग्यतापूर्वक जीने के निर्देश देना है।

नैतिक मूल्यों की विविधता होती है और यह अलग-अलग संस्कृति, दार्शनिक परंपरा और धार्मिक आचार्यों द्वारा प्रभावित होते हैं। नीचे कुछ मुख्य नैतिक मूल्यों को देखते हैं:

1. सत्य: सत्य का पालन करना और सत्य बोलना नैतिकता का महत्वपूर्ण मूल्य है। सत्य कहना और उसके आचरण में स्थिर रहना सच्चाई, ईमानदारी और आपसी विश्वास की नींव है।
2. न्याय: न्याय नैतिक न्याय के मूल्य को दर्शाता है, जिसमें सबको समान और उचित व्यवहार बारबार व्याप्त होना चाहिए। यह न्यायपूर्वक और विचारशीलता से युक्त निर्णय लेने का मार्ग दिखाता है। न्याय के माध्यम से, व्यक्ति और समाज को इंसानी अधिकारों का पालन करने, न्यायसंगत व्यवहार करने और आपसी संबंधों में समानता और न्याय की प्राथमिकता को सु निश्चित करने का मूल्य मिलता है।
3. अहिंसा: अहिंसा, यानी हिंसा से परहेज करना, एक महत्वपूर्ण नैतिक मूल्य है। इसका अर्थ है कि हमें दूसरों के प्रति क्रूरता, उत्पीड़न और क्षति करने से बचना चाहिए। अहिंसा नैतिक ता का मूलमंत्र है और वैश्विक समरसता और समझदारी की ओर प्रेरित करता है।
4. धार्मिकता: धार्मिकता नैतिकता का एक महत्वपूर्ण पहलू है जो व्यक्ति को ईश्वरीय मूल्यों, ध र्मसंबंधी सिद्धांतों और आचारों का पालन करने की सिख देता है। धार्मिकता से लोग अपने जीवन को सार्थक बनाने, अच्छाई का प्रचार करने, और दया, समरसता, आत्मदर्शन और स्वाधीनता की प्राप्ति करने का प्रयास करते हैं। धार्मिकता व्यक्ति को अपने कर्तव्यों के प्रति संबंधित अनुशासनों को पालन करने के लिए प्रेरित करती है और उसे आध्यात्मिक विकास की ओर अग्रसर करती है। धार्मिकता नैतिक मूल्यों को स्थायीत्व और आदर्शता के साथ जो ड़ती है और व्यक्ति को सही और उचित आचरण का मार्ग दिखाती है।

5. समाजसेवा: समाजसेवा नैतिकता का महत्वपूर्ण पहलू है जो समाज की सेवा, सहायता और समर्थन को प्रोत्साहित करता है। इसके माध्यम से, हम दूसरों की जरूरतों को समझते हैं और उन्हें सहायता प्रदान करने का प्रयास करते हैं। समाजसेवा नैतिक उद्देश्यों के लिए ह मारे जीवन को अर्थपूर्ण बनाने का एक महत्वपूर्ण तरीका है और समाज के साथीत्व और बंधु त्व की भावना को स्थापित करता है।
6. संवेदनशीलता: संवेदनशीलता नैतिकता के एक महत्वपूर्ण आदर्श है जो हमें दूसरों की भाव नाओं, आवश्यकताओं और पीड़ा की समझ प्रदान करती है। यह हमें दया, सहानुभूति और सम्मर्थ करने के लिए प्रेरित करती है। संवेदनशीलता से हम दूसरों के दुख और सुख को म हसूस करते हैं और उन्हें सहायता और समर्थन प्रदान करने के लिए उत्साहित होते हैं। यह हमें संघर्षों और विपरीतताओं का सामना करने में मदद करती है और एक समर्पित और प रोपकारी समाज की निर्माण करने के लिए महत्वपूर्ण है।

नैतिक मूल्यों के इन आदर्शों के माध्यम से हम समाज में एक उच्च मानवीय स्तर और सामरिक विचारधा रा का निर्माण करते हैं। इन मूल्यों का पालन हमें स्वतंत्र, न्यायप्रिय, सहानुभूतिपूर्ण और उदार व्यक्ति बना ता है और सद्भावना, समरसता और सामंजस्य के रूप में समाज में व्याप्त होने के लिए सहयोग करता है। इन मूल्यों के पालन से हम समृद्ध, समान और आदर्श समाज की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

इस प्रकार, भवभूति के नैतिक मूल्यों का पालन हमें व्यक्तिगत स्तर पर उच्च मानवीयता और नैतिकता की प्राप्ति करने की सिख देता है। इन मूल्यों का आचरण हमारे व्यक्तिगत जीवन, परिवार, समुदाय और समाज को सशक्त बनाने में मदद करता है। यह हमें एक सामरिक और सद्भावनापूर्ण वातावरण में जीने के लिए प्रेरित करता है और दूसरों के प्रति सम्मान, न्याय और सहानुभूति की भावना को बढ़ाता है। भवभू ति के नैतिक मूल्यों के पालन से हम एक उच्चतर विचारधारा और विश्वास के साथ अपने संप्रदाय, संस्कृ ति और समाज को समृद्ध, समरस्थ और आदर्श बनाने का कार्य कर सकते हैं।

संदर्भ सूची :-

1. राम गोपाल, His Art and Culture
2. हजारी प्रसाद द्विवेदी : राष्ट्रीय कवि कालिदास, हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रन्थावली
3. रामजी उपाध्याय, संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास
4. आचार्य दण्डी ने लिखा है कि लिप्ता मधुद्रवेणासन् यस्य निर्विषया गिरः । तेनेदं वर्त्म वैदर्भ कालिदासेन शोधितम् । ।
5. “उपमा कालिदासस्य, भारवेरर्थगौरवम्”
6. मालविकाग्निमित्रम् (1 / 16)
7. तथैव (1/17)
8. तथैव (2 / 9)
9. रघुवंशम् (1/10)
10. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1/2)

11. मालविकाग्निमित्रम् (1 /6)
12. रहीम दोहावली
13. रघुवंशम्
14. उत्तररामचरितम् (2/4)
15. विक्रमोर्वशीयम् (4/27)
16. तथैव (3 / 31)
17. मेघदूतम् - उत्तरभाग - 47
18. विक्रमोर्वशीयम् (4/3)
19. मेघदूतम् – पूर्वभाग - 6
20. रघुवंशम् (3/48)
21. तथैव (6/30)
22. तथैव (14/46)
23. तथैव (11/1)
24. अभिज्ञानशाकुन्तम् अंक-4
25. तथैव अंक-7
26. तथैव अंक
27. तथैव अंक-6
28. तथैव अंक - 2
29. तथैव अंक-3
30. पूर्वमेघ्ज्ञ - 5
31. तथैव 20
32. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1 / 1)